कक्षा में लोकतंत्र को सुदृढ़ करना

एलिस ऑस्टिन बार्वा

स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चे पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ दूसरों के साथ मेलजोल करना भी सीखते हैं। ऐसे में यह मौजूदा सामाजिक विषमताओं को और भी बढ़ा सकता है, लेकिन यह एक ऐसा स्थान भी है जहाँ इन पर चर्चा और विचार-विमर्श हो सकता है ताकि बच्चे असल दुनिया में इन्हें चुनौती देना सीख सकें। यही नहीं स्कूल बच्चे को समाज के भीतर अपनी जगह पहचानने में भी मदद करता है। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि बातचीत के अलावा, हम अपने कार्यों व आचरण के द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के लिहाज़ से, बच्चों को उनकी ऊर्जा को दिशा देने में मदद करें और एक लोकतांत्रिक भविष्य की नींव रखें।

कक्षा की गतिशीलता

अपने 'एसोसिएटशिप प्रोग्राम' के अन्तर्गत जब मैंने छत्तीसगढ़ के ग्राम खरसिया के सरकारी स्कूल में पढ़ाना शुरू किया तो विद्यार्थियों द्वारा मुझसे पूछा गया ख़ासतौर पर सबसे अजीब सवाल था, "आप हमें मारती क्यों नहीं हो?" मेरे स्कूली दौरों के शुरुआती दिनों में, मुझे चुप्पी और कौतुहल का सामना करना पड़ता था। और अमूमन, शिक्षक नाम के एक रोबदार शख़्स की उपस्थिति में चुप्पी उनके कौतुहल पर हावी रहती थी। लेकिन शिक्षक के जाते ही वहाँ पूरी धमा-चौकड़ी मच जाती थी और बच्चे आपस में लड़ते भी थे।

पूरी कक्षा में छाए विद्यार्थियों के सन्नाटे को अनुशासन माना जाता था, लेकिन यह अनुशासन शिक्षक के द्वारा 20-25 विद्यार्थियों की भीड़ पर चिल्ला-चिल्लाकर हासिल किया जाता था। थोड़ी देर के लिए तो इससे बात बन जाती थी, लेकिन इसके चलते जब भी उनके सहपाठी उनके 'आदेशों' पर ध्यान नहीं देते थे तो विद्यार्थी किसी समाधान तक पहुँचने के लिए चिल्लाने और एक-दूसरे को पीटने का ही काम करते थे। विद्यार्थी अपने आस-पास के वयस्कों द्वारा जताए गए इस आचार-व्यवहार को आत्मसात कर चुके थे। अपनी कक्षा चलाने के लिए मुझे न केवल विद्यार्थियों के व्यवहार-प्रबन्धन के एक बेहतर विकल्प की आवश्यकता थी, बल्कि ऐसा माहौल बनाने की ज़रूरत थी जिससे वे व्यवहार के पुराने ढर्रे को भुला सकें।

डिस्कशन्स तो, मिस, बड़े लोगों से होते हैं, हमारे साथ थोड़ी! यह मेरी कक्षा की एक लड़की द्वारा की गई टिप्पणी थी, जब मैं विद्यार्थियों के साथ कक्षा की उन प्रथाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए बैठी थी जिनके बारे में उनका मानना था कि सीखने के लिए इन्हें होना ही चाहिए। उसके बयान से मुझे एहसास हुआ कि किस तरह सत्ता को लेकर बच्चों की सोच असल ज़िन्दगी में उसे होता हुआ देखने से उपजती है। अक्सर, एक ख़ास माहौल में एक ख़ास तरह के आचरण की अपेक्षा उनसे की जाती है लेकिन उनके साथ माक़ूल बातचीत के बिना ही।

बच्चों को कोरे काग़ज़ के तौर पर देखने के आदी सत्ताधारी वयस्क यह मानकर चलते हैं कि ऐसी बातचीत बच्चों की समझ से बाहर की बात है। मेरी समझ में, ऐसा रवैया भी वृहत्तर समाज में शक्ति, विशेषाधिकार और बहिष्कार का एक रूप है। कक्षाओं में, अधिकारों से लैस लोग, जिन्हें सत्ता के समकक्ष माना जाता है, बेझिझक होकर अलोकतांत्रिक निर्णय लेते हैं। प्रभुत्व के इस ओहदे को अक्सर कुछ क्षेत्रों में विशेषज्ञता के तुल्य माना और स्वीकृत किया जाता है। ये पारम्परिक कक्षाएँ यथास्थिति को सुदृढ़ करती हैं और आलोचनात्मक सोच व आत्म-चिन्तन को सीमित कर देती हैं।

लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना

कक्षा प्रतिमानों पर बात करने से विद्यार्थियों को न केवल इस बात पर चर्चा करने का मौक़ा मिला कि कक्षा में वे किन प्रथाओं का पालन करेंगे, बल्कि इस पर भी बात करने का मौक़ा मिला कि वे इन्हें क्यों अपनाएँ। इससे विद्यार्थी निम्नलिखित कर पाए –

- संवाद के महत्त्व और लोकतांत्रिक निर्णय लेने की प्रक्रिया, कक्षा में स्वीकृत आचरण, चर्चाओं में बोलने व सुनने के महत्त्व को समझे और सीखे कि सुनने के लिए हमें ध्यान भी देने की ज़रूरत है और कभी-कभी हमें चुप भी रहना चाहिए।
- शारीरिक दण्ड देने के उदाहरण की समीक्षा करते हुए उस पर सवाल खड़े कर सके। नतीजतन, इस बात पर चर्चा हुई कि क्या पीटे जाने पर विद्यार्थी सही में कुछ सीखते हैं।

- कक्षा में बातचीत के दौरान हमारे सामने आईं चुनौतियों के मद्देनज़र, मिल-जुलकर वे अपनी कक्षा के अनुकूल मानदण्डों का निर्माण कर पाए।

यह सारी बातचीत स्व-आरम्भ (proactive behavior) व्यवहार प्रबन्धन अभ्यास का एक हिस्सा थी, जहाँ व्यवहार सम्बन्धी अपेक्षाएँ स्पष्ट रूप से बताई गई थीं। एक शिक्षक के बतौर, इसने मुझे चेताने और अवांछित व्यवहार होने के पहले ही उन्हें सुधार लेने का अवसर दिया।

शिक्षक की भूमिका

प्रत्येक कक्षा अपने-अपने अनूठे विद्यार्थियों के साथ कुछ ख़ास ही होती है। एक ओर जहाँ, अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों को समझना मेरे लिए एक सतत व लम्बी प्रक्रिया का हिस्सा था, वहीं हमने कक्षा में उनके नियमित व्यवहार को सक्रिय रूप से प्रबन्धित करने के लिहाज़ से कुछ ख़ास नुस्ख़े विकसित किए।

ऊर्जा से भरे विद्यार्थियों पर चिल्लाने की बजाय हमने कक्षा में विद्यार्थियों का ध्यान भलीभाँति खींचने के लिए 'मार्को पोलो' या '1, 2, 3 ऑल आइज़ ऑन मी' जैसी कॉल-एंड रिस्पान्स' (पुकार-प्रत्युत्तर) रणनीतियाँ अपनाने की साझा समझ विकसित की। प्राथमिक कक्षाओं में यह विशेष रूप से मददगार बना क्योंकि वहाँ विद्यार्थियों का ध्यान उम्र में उनसे बड़े विद्यार्थियों जितनी देर नहीं टिक पाता। विद्यार्थियों ने मेरी अनुपस्थिति में भी कक्षा में वैचारिक आदान-प्रदान में अपने सभी सहपाठियों को शामिल करने के लिए इसका इस्तेमाल किया।

आत्म-प्रबन्धन और आत्म-जागरूकता को और विकसित करने के लिहाज़ से, हमने कक्षा में ध्यान का अभ्यास नियमित किया। शुरू-शुरू में, हमने इसे केवल शनिवार को किया, जिसमें बिना हीं-हीं किए चार मिनट भी चुपचाप बैठना एक बहुत बड़ा काम होता। लेकिन धीरे-धीरे, विद्यार्थी इसमें सहज हो गए, कभी वे दीवार का सहारा लेकर उससे टिके होते और पृष्ठभूमि में मद्धम वाद्य संगीत बज रहा होता। इससे विद्यार्थियों में भावनात्मक लचीलापन और जागरूकता पैदा करने में मदद मिली।

मैडम की तबियत ख़राब है, आज उन्हें परेशान नहीं करना। एक बार जब मैं बीमार थी, मेरा एक विद्यार्थी कक्षा में शान्त और एकाग्र रहने के लिए सभी के कानों में यह फुसफुसाता जा रहा था। दया और करुणा जैसे ऐसे भाव कक्षा में हमारे द्वारा किए जा रहे लोकतांत्रिक संवादों और व्यवहारों का आईना बन जाते हैं। यह सब न केवल अपने परिवेश के प्रति उनकी जागरूकता को दर्शाता है बल्कि आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबन्धन और उनके ज़िम्मेदार निर्णय कौशल को भी दर्शाता है।

मितवा प्रणाली

एक शिक्षक के बतौर, स्वीकार्य आचरण को सुदृढ़ करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के बीच समान साझेदारी स्थापित करने के लिए विद्यार्थी-केन्द्रित व लोकतांत्रिक कक्षा अनुभव बनाने के इस प्रयास में मेरी भूमिका यह जानने की थी कि विद्यार्थियों को किन-किन चीज़ों से जूझना पड़ता है। अपने विद्यार्थियों को समग्र रूप से समझने के लिए उनके घर और समुदाय के बीच जाना आदि शामिल था, जिससे मुझे कक्षा में मिलने वाली विभिन्न सांस्कृतिक व व्यावहारिक प्रतिक्रियाएँ समझने में मदद मिली।

इस मामले में एक उदाहरण अनु का है, जो स्कूल के ठीक बगल में रहने के बावजूद नियमित रूप से स्कूल से अनुपस्थित रहता था। वह बातूनी और जवाबदार तो था लेकिन उसे लिखने या कक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होती थी। उसके ज़ोर से बोलने के बावजूद उसे अक्सर उपेक्षित कर दिया जाता था या चुप करा दिया जाता। आख़िर को वह झगड़ा ही करता मिलता था और अपने से एक साल छोटे अपने सहपाठियों को पीटा करता। एक बार कक्षा में चर्चा के दौरान, मुझे पता चला कि उसकी माँ ने उसे छोड़ दिया था और उसके पिता प्रदेश के बाहर काम कर रहे थे। एक दिन उसके सहपाठियों के साथ योजना बनाने के बाद हम उसके घर गए। हमने कक्षा के कुछ अनुभव साझा किए और उसे कक्षा में आने के लिए प्रोत्साहित किया। हमने उसे मदद का आश्वासन दिया और एक 'मितवा' या मित्र प्रणाली लागू की।

मित्र प्रणाली में, शैक्षणिक व व्यावहारिक आवश्यकताओं और कौशल के आधार पर विद्यार्थियों की जोड़ियाँ बनाई जाती हैं। अनु आसानी से मनगणित कर सकता था और प्रोत्साहित किए जाने पर उसने हिन्दी (हमारी दूसरी भाषा) के साथ-साथ अँग्रेज़ी (हमारी तीसरी भाषा) में भी पढ़ने का प्रयास किया। इस मित्र प्रणाली ने उसे कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने, मित्र बनाने और अपने मित्र की सीखने की प्रक्रिया की ज़िम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया। क्लास में उसकी पढ़ाई में काफ़ी क्रान्तिकारी बदलाव आया। हालाँकि स्वतंत्र रूप से एक पैराग्राफ़ से अधिक लिखने तक में उसे संघर्ष करना पड़ता, लेकिन स्कूल सत्र बीतते-बीतते वह हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों को धाराप्रवाह पढ़ने लगा। एक अच्छे-ख़ासे झगड़ालू बच्चे से वह छोटे विद्यार्थियों के बीच झगड़े रोकने वाला इन्सान बन गया था।

निष्कर्ष

पारम्परिक कक्षाओं में अनुशासन के नाम में पूर्ण आज्ञाकारिता की अपेक्षाएँ निरंकुश और सत्तावादी हैं, जो कक्षा में विद्यार्थियों

और शिक्षकों, दोनों को अमानवीय बनाती हैं। हिंसा का सहारा लेना, यानी शारीरिक दण्ड और मौखिक दुर्व्यवहार वयस्कों और बच्चों के बीच एक स्व-आरम्भ कक्षा प्रबन्धन, सहयोग व सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा की अनुपस्थिति को दर्शाता है।

दरअसल विद्यार्थियों को मानवीय नज़रिए से देखे जाने की ज़रूरत है, जहाँ कक्षा में किए जाने वाला कोई भी अभ्यास वृहत्तर समाज के प्रति हमारी समझ और हमारे बर्ताव को दर्शाता है। विद्यार्थियों (जो लोकतांत्रिक निर्णय-प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता रखते हैं) को सक्रिय शिक्षार्थी के रूप में देख पाना एक महत्त्वपूर्ण क़दम है। स्कूल ने बाल संसद और (विद्यार्थी प्रतिनिधि के रूप में) स्कूल प्रबन्धन समिति में भागीदारी जैसी प्रक्रियाएँ ज़रूर स्थापित की हैं, पर बच्चों की आवाज़ें काफ़ी हद तक अनसुनी और अमान्य रही आती हैं।

एक शिक्षक के रूप में, यह हम पर निर्भर है कि हम अपनी दिनचर्या और कक्षा में होने वाले शैक्षिक आदान-प्रदान के भीतर ऐसी प्रक्रियाएँ बनाएँ जो संवाद और अभ्यास के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवहार को सुदृढ़ करें, जिससे उन्हें स्कूल प्रणालियों और बड़े समाज में भाग लेने में सक्षम बनाया जा सके। आख़िरकार, लोकतंत्र कोई यांत्रिक प्रक्रिया तो है नहीं, बल्कि एक जीवन्त व शाश्वत सामाजिक आवश्यकता है।

बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।

References

Doyle, W. (2013). *Ecological Approaches to Classroom Management*. Handbook of Classroom Management (pp. 107-136). Routledge.

Larson, K. E., Pas, E. T., Bradshaw, C. P., Rosenberg, M. S., & Day-Vines, N. L. (2018). *Examining How Proactive Management and Culturally Responsive Teaching Relate to Student Behavior: Implications for Measurement and Practice*. School Psychology Review, 47(2), 153-166.

Nakane, I. (2005). *Negotiating Silence and Speech in the Classroom*. Multilingua - Journal of Cross-Cultural and Interlanguage Communication 24(1part2):75-100.

Taylor, L. A. (2022). *Silence as Political and Pedagogical: Reading Classroom Silence Through Neoliberal and Humanizing Lenses*. Linguistics and Education, 68, 100863.



एलिस ऑस्टिन बार्वा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, रायगढ़, छत्तीसगढ़ के साथ बतौर एक रिसोर्स पर्सन कार्यरत हैं। उन्होंने अपनी एमए की पढ़ाई डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से की है। उनके पसन्दीदा शोध विषय हैं – शिक्षा, संस्कृति, समाज विज्ञान और भाषा-विज्ञान। उनसे *alice.barwa@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय